International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157
Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 3; Issue 3; May 2018; Page No. 58-63

आदिवासी तथा गैर आदिवासी शिक्षकों के जीवन कौशल का अध्ययन

ज्योति बाला वया[1], डॉ॰ अमित कुमार देव[2]
[1] लोकमान्य तिलक शिक्षक प्रशिक्षण, महाविद्यालय, (सी.टी.ई.) डबोक, उदयपुर, राजस्थान, भारत।
[2] सहायक आचार्य, लोकमान्य तिलक शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, (सी.टी.ई.) डबोक, उदयपुर, राजस्थान, भारत।

प्रस्तावना

शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया है जिसे बालक अपने सामान्य रूप से किसी विशेष अवधारणा रूपी चादर को धारण कर सकता है। शिक्षा के महत्व के सम्बन्ध में डॉ. एस. अल्तेकर का मत है – ''शिक्षा को प्रकाश और शक्ति का ऐसा स्त्रोत माना जाता है, जो हमारी शारीरिक, मानसिक, भौतिक और आध्यात्मिक शक्तियों तथा क्षमताओं को निरन्तर एंव सामंजस्यपूर्ण विकास करके, हमारे स्वभाव को परिवर्तित करती है और उसे उत्कृष्ट बनाती है।''

शिक्षा का अर्थ

शिक्षा शब्द शिक्ष् धातु से बना है जिसका अर्थ है सिखने, सिखाने की प्रक्रिया अंग्रेजी में Education शब्द Educo से बना है, अन्दर से Duco बाहर निकालना अर्थात् व्यक्ति की अन्तर्निहित क्षमताओं को बाहर निकालना शिक्षा है।

शिक्षा द्वारा मानव सुसंस्कृत होता है। शिक्षा का गुणात्मक स्तर शिक्षकों के स्तर पर आश्रित होता है। इसलिए शिक्षा आयोग के अनुसार भारतीय शिक्षा के गुणात्मक एवं राष्ट्रीय विकास में शिक्षक की योग्यता व गुण ही विशेष महत्व रखते है। कोठारी आयोग (1964–66) ने लिखा भी है, "भारत का निर्माण उसके अध्ययन कक्षों में हो रहा है।" यह पंक्ति शिक्षक की भूमिका को पूर्णतया स्पष्ट करती है।

कौशल से तात्पर्य ऐसी दक्षता से है जो पेशियों के क्रियाकलापों पर आधारित होता है। इसमें संज्ञानात्मक कौशल जिसमें तार्किक ढंग से सोचकर अभिव्यक्ति होती है भी सम्मिलित किये जाते है। कौशलों द्वारा क्रियात्मक पक्ष के उद्देश्य प्राप्त किये जाते है। क्रियात्मक क्षमतायें व्यक्ति की सामान्य विशेषतायें या गुण होते है, जिनका सम्बन्ध अनेक प्रकार के कौशलों से होता है। कौशल अनुक्रियाओं का एक समूह होता है जिसमें शारीरिक तथा क्रियात्मक क्षमतायें निहित होती है,

शोध में प्रयुक्त शब्दों का परिभाषिकरण

शोध अध्ययन हेतु विषय चयन करने के बाद यह अति आवश्यक होता है कि अध्ययन विषय में प्रयुक्त समस्या से सम्बंधित शब्दों का परिभाषिकरण पूर्णतया से स्पष्ट किया जाये तथा शब्दों को भली प्रकार से सही संदर्भ में समझा जाये कि इन शब्दों को प्रस्तुत शोध में किस विशिष्ट अर्थ में लिया गया है, जिन्हें क्रम से नीचे अभिव्यक्त किया जा रहा है :–

अनुसूचित जनजाति

अनुसूचित जनजाति से अभिप्राय है एक विशेष जाति के लोग जिनमें शिक्षा की कमी होने की वजह से अन्य जाति के लोगों से हर क्षेत्र में पिछड़े हैं, जनजातियों में कई उपजातियां आती है जो परिगणना के आधार पर सामाजिक एवं आर्थिक स्तर पर हीनता व दीनता के अन्तर्गत आती है, संविधान में इन्हें जनजाति के नाम से अभिहित किया गया है,

जीवन कौशल

वह अभियोग्यता है जो कि उच्च स्वास्थ्य सम्पन्न सामाजिक व नागरिक जीवन के लिए परम् आवश्यक है।

उद्देश्य :– शोधार्थी द्वारा निम्नलिखित उद्देश्यों का निर्धारण किया जायेगा :–

1. समग्र न्यादर्श शिक्षकों के जीवन कौशल का अध्ययन करना।
2. आदिवासी शिक्षकों के जीवन कौशल का अध्ययन करना।
3. गैर आदिवासी शिक्षकों केजीवन कौशल का अध्ययन करना।
4. आदिवासी व गैर आदिवासी शिक्षकों की जीवन कौशल का तुलनात्मक अध्ययन करना

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन

1. सिहं एन.पी. (2005) ''के.वी. के प्रशिक्षण कार्यक्रम के लघु कृषकों में कौशल विकास का मूल्यांकनात्मक अध्ययन करना।'' इस शोधकार्य से पाया गया कि के.वी. के प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान दिया गया कौशल ज्ञान कृषि का उत्पादन क्षेत्र में सार्थक पाया जाता
2. रूही कान्त (2008) ''प्राथमिक स्तर विद्यार्थियों के पठन आदतों व लेखन कौशल पर निर्देषात्मक परामर्श के प्रभावों का अध्ययन करना।''
3. गुप्ता एस.के. (2009) ''माध्यमिक विद्यालयों के प्रशिक्षण का केरियर नियोजन कौशल निर्णय क्षमता पर प्रभाव का अध्ययन''।
4. सिंधी एन.के (1975) :''राजस्थान के विद्यालयों के अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित जनजातियों के विद्यार्थियों के शैक्षिक समस्याओं का अध्ययन'' लघुशोध प्रबंध, राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर।
5. पटेल टी. (1984) ''जनजाति महिलाओं में शिक्षा का विकास'' समाजशास्त्र विभाग, गुजरात विश्वविद्यालय। शोध उद्देश्य में पाया कि जनजाति महिलाओं की शिक्षा के लिए गए प्रयासों की जांच करना, अनुसूचित जनजाति की महिलाओं की साक्षरता विस्तार नामांकन एवं शैक्षिक उपलब्धि की तुलना हरियाणा राज्य के सामान्य वर्ग की महिलाओं से करना।
6. चौहान, यशपाल सिहं (1992) ''अनुसूचित जनजाति में निरक्षरता एवं शिक्षा के प्रति उदासीनता का कारणः एक सर्वेक्षण,'' लघुशोध प्रबंध, मो.ला.सु.वि.वि. उदयपुर। शैक्षिक भौतिक अवरोध के अन्तर्गत विद्यालय दूर स्थित होना अभिभावक का अशिक्षित होना प्रादेशिक भाषा में शिक्षा न होना विद्यालय में पूर्ण सामग्री

उपलब्ध न होना, मनोवैज्ञानिक शिक्षण अवरोधों में जनजाति छात्रों के शिक्षा के प्रति उचित उत्प्रेरणा एवं मार्गदर्शन नहीं होता हैं।

7. आदिम जाति शोध संस्थान, उदयपुर (2001) ''राजस्थान के जनजाति उपयोजना क्षेत्र में जनजाति बालिका शिक्षा की वर्तमान स्थिति और उसमें सुधार का अध्ययन''। इस अध्ययन का उद्देश्य राजस्थान के जनजाति उपयोजना क्षेत्र में जनजाति बालिकाओं की स्थिति का पता लगाना।
8. शोध समस्या का परिसीमन :– शोधार्थी द्वारा समय, धन एवं श्रम को ध्यान में रखते हुए ही अपने लघु शोध कार्य को पूर्ण करने का प्रयास किया है क्योंकि समस्या का क्षेत्र बहुत व्यापक होता है एवं सम्पूर्ण क्षेत्र का अध्ययन एक शोधकर्ता के लिये संभव नहीं होता है। अतः शोधार्थी द्वारा इस लघु शोध के प्रभावषाली एवं सार्थक अध्ययन के लिए निम्न रूप से परिसीमन किया जायेगा

   (अ) भौगोलिक दृष्टि से :– शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत शोध का क्षेत्र उदयपुर संभाग तक ही सीमित किया जायेगा

   (ब) विद्यालय की दृष्टि से :– प्रस्तुत शोध के आकंडे एकत्र करने के लिए उदयपुर जिला के 80 राजकीय एवं 80 निजी विद्यालयों को चुना जायेगा।

   (स) जाति की दृष्टि से :– प्रस्तुत शोध अध्ययन में आदिवासी व गैर आदिवासी दोनो जाति के शिक्षकों को ही शामिल किया जायेगा।
9. शोध विधि :– किसी भी शोध अध्ययन को सफलतापूर्वक प्रेक्षित करने के लिए आवश्यक है कि समस्या के अनुरूप ही विधि का चयन किया जाए । जिस विधि का चयन किया जाए वह उपयुक्त एवं पूर्ण नियोजित होनी चाहिए। शोध विषय की समस्या को भली–भाँति समझकर शोधार्थी ने सर्वेक्षण विधि को उपयुक्त माना है, क्योंकि इसका संबंध वर्तमान काल की स्थितियों, प्रचलित व्यवहार, विश्वास,दृष्टिकोण या अभिवृत्तियों आदि से है।अतः सर्वेक्षण विधि का चयन किया जायेगा।
10. न्यादर्श :–उदयपुर जिले से कुल 800 शिक्षकों का चयन करेगा जिसमें 400 आदिवासी एवं 400 गैर आदिवासी शिक्षको का चयन किया जायेगा। भावी शोध के लिए न्यादर्श का स्वरूप इस प्रकार से रहेगा

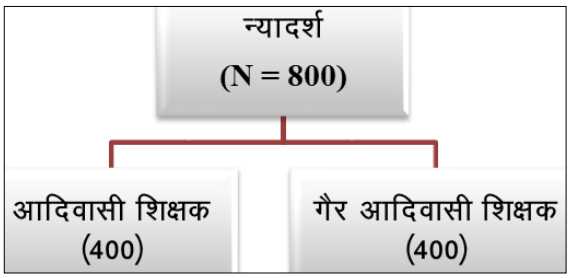

11. शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी प्रविधियाँ :– प्रस्तुत अध्ययन में शोधार्थी द्वारा निम्नलिखित सांख्यिकी प्रविधियों का प्रयोग किया जायेगाः–
    i) मध्यमान
    ii) मानक विचलन
    iii) टी–परीक्षण
    iv) सहसंबंध

12. शोध में प्रयुक्त उपकरण निर्माण के चरण

1. **क्षेत्रों का चयन–** समय, धन एवं श्रम को ध्यान में रखते हुए ही अपने लघु शोध कार्य को पूर्ण करने का प्रयास किया है क्योंकि समस्या का क्षेत्र बहुत व्यापक होता है एवं सम्पूर्ण क्षेत्र का अध्ययन एक शोधकर्ता के लिये संभव नहीं होता है। अतः इस लघु शोध के प्रभावशाली एवं सार्थक अध्ययन के लिए निम्न रूप से परिसीमन किया जायेगा।
   1. अध्यापको का रहन–सहन
   2. अध्यापको का व्यवहारिक ज्ञान
   3. अध्यापको का आपसी व्यवहार
   4. अध्यापकों की सोच प्रवृति
   5. अध्यापकों की कार्य शैली
   6. अध्यापकों की नियमितता
   7. अध्यापको के सीखने की प्रवृति
   8. अध्यापकों का सामाजिक कौशल
2. **उपकरण का अंकन–** शिक्षक अभिमतावली पाँच विकल्पों पूर्णतः सहमत, सहमत, अनिश्चित, असहमत व पूर्णतः असहमत युक्त रेटिंग स्केल हैं। इस अभिमतावली में सकारात्मक व नकारात्मक दोनों ही प्रकार के कथन सम्मिलित किए गए हैं। सकारात्मक कथनों व नकारात्मक कथनों का अंकन निम्न प्रकार किया गया।

सारणी

तालिका 1: कथनों की अंकन योजना

विकल्प	विकल्प पर अंकन	
	सकारात्मक कथन	नकारात्मक कथन
पूर्णतः सहमत	5	1
सहमत	4	2
अनिश्चित	3	3
टसहमत	2	4
पूर्णतः असहमत	1	5

3. **उपकरण पद का विश्लेषण–** इस प्रकार निर्मित कथनों में युक्त अभिमातावली को आदिवासी तथा गैर आदिवासीयों और राजकीय व निजी विद्यालयों के आधार पर प्रशासित किया गया। अभिमतावली में दिए गए निर्देशों के अनुरूप अभिमतावली को भरने के लिए कहा गया। प्रशासन के पश्चात उतर पत्रों की जाँच की गई जिसमें सकारात्मक तथा नकारात्मक कथनों का अंकन पूर्व में निर्धारित योजनानुसार किया गया। जिन कथनों का 'टी' मान 2.064 से अधिक अथवा 2.064 के बराबर हुआ वे यह प्रदर्शित करते है कि उच्च तथा निम्न समूह उन कथनों में सार्थक रूप भिन्नता रखते है अतः उन्हीं कथनों का चयन किया गया जिनका मान 2.064 के बराबर या उससे अधिक था।
4. **उपकरण का अन्तिम स्वरूप–** शोधकर्त्री द्वारा निर्मित कथनों की शिक्षक अभिमतावली के अंतिम स्वरूप में क्षेत्रवार कथनों की संख्या निम्न सारणी में दर्शायी गयी है–

सारणी

तालिका 2: क्षेत्रवार कथनों की संख्या

क्र. स.	क्षेत्र	प्रारंभिक कथनों की संख्या	अनुमोदित कथनों की संख्या	टी मूल्य के आधार पर कथनों की संख्या
1.	अध्यापको का रहन–सहन	7	6	6
2.	अध्यापको का व्यवहारिक ज्ञान	10	11	9
3.	अध्यापको का आपसी व्यवहार	10	11	9
4.	अध्यापकों की सोच प्रवृति	14	13	10
5.	अध्यापकों की कार्य शैली	8	9	7
6.	अध्यापकों की नियमितता	9	9	8
7.	अध्यापको के सीखने की प्रवृति	8	8	7
8.	अध्यापकों कर सामाजिक कौशल	11	11	9
	योग	77	78	65

समग्र शिक्षकों के जीवन कौशल का अध्ययन

समग्र शिक्षको के जीवन कौशल का अध्ययन करने के लिए 80 राजकीय व 80 निजी विद्यालयों के 400 आदिवासी व 400 गैर–आदिवासी शिक्षको के जीवन कौशल प्रमापनी अध्यापकों द्वारा भरवाई गई तथा उनके दत्तों का संकलन किया गया, प्राप्त दंत्तो के आधार पर मध्यमान व मानक विचलन ज्ञात कर जीवन कौशल का अध्ययन किया गया है।

सारणी

तालिका 3: समग्र शिक्षकों के जीवन कौशल से सम्बन्धित दंतो के क्षेत्रवार मध्यमान एवं मानक विचलन

कम संख्या	क्षैत्र (जीवन कौशल)	छ	मध्यमान	मानक विचलन
1.	अध्यापको का रहन–सहन	800	26.80	1.388
2.	अध्यापको का व्यवहारिक ज्ञान	800	28.15	1.782
3.	अध्यापको का आपसी व्यवहार	800	37.48	1.788
4.	अध्यापकों की सोच प्रवृति	800	40.02	2.574
5.	अध्यापकों की कार्य शैली	800	32.34	1.264
6.	अध्यापकों की नियमितता	800	31.71	2.126
7.	अध्यापको के सीखने की प्रवृति	800	32.30	1.589
8.	अध्यापकों कर सामाजिक कौशल	800	43.14	0.958
कुल		800	271.79	5.495

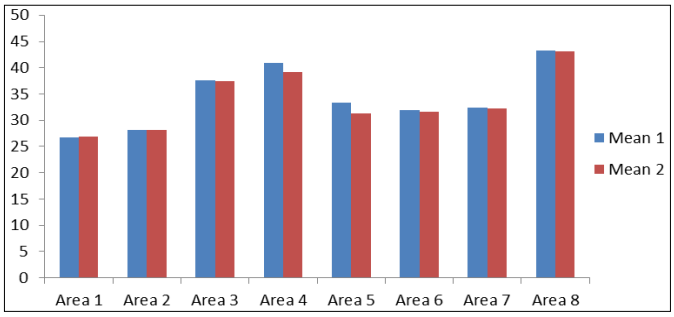

आरेख 1: समग्र शिक्षको के जीवन कोशल से प्राप्त दन्तो का क्षेत्रवार

विश्लेषण

सारणी व आरेख संख्या 1 के आधार पर यह ज्ञात होता है। कि समग्र अध्यापको के जीवन कौशल के दत्तो का मध्यमान 271.79 तथा मानक विचलन 5.495 प्राप्त हुआ हैं

क्षैत्रानुसार विश्लेषण

1. अध्यापको का रहन–सहन :– इसके अन्तर्गत उदयपुर क्षैत्र के आदिवासी तथा गैर–आदिवासी अध्यापको के रहन–सहन का मध्यमान 26.80 तथा मानक विचलन 1.388 प्राप्त हुआ है। इसके अन्तर्गत कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. अध्यापकों का व्यवहारिक ज्ञान :– इस क्षैत्र के अन्तर्गत आदिवासी व गैर–आदिवासी अध्यापकों का मध्यमान 28.15 मानक विचलन 1.782 प्राप्त हुआ है।
3. अध्यापकों का आपसी व्यवहार :– इस क्षैत्र के अन्तर्गत आदिवासी व गैर–आदिवासी अध्यापको का मध्यमान 37.48 तथा मानक विचलन 1.788 प्राप्त हुआ है।
4. अध्यापको की सोच प्रवृति :– इस क्षैत्र के अन्तर्गत आदिवासी व गैर–आदिवासी अध्यापको की सोच प्रवृति के मध्यमान 40.02 तथा मानक विचलन 2.574 प्राप्त हुआ है।
5. अध्यापको की कार्य शैली :– इस क्षैत्र के अन्तर्गत आदिवासी व गैर आदिवासी अध्यापको की कार्य शैली के मध्यमान कृमशः 33. 34 तथा मानक विचलन 1.264 प्राप्त हुआ है।
6. अध्यापकों की नियमितता :– इस क्षैत्र के अन्तर्गत आदिवासी व गैर–आदिवासी अध्यापको की नियमितता के मध्यमान क्रमशः– 31.71 तथा मानक विचलन 2.126 प्राप्त हुआ हैं।
7. अध्यापको के सीखने की प्रवृति :– इस क्षैत्र के अन्तर्गत आदिवासी तथा गैर–आदिवासी अध्यापकों के सीखने की प्रवृति के मध्यमान कृमशः– 32.30 तथा मानक विचलन 1.589 प्राप्त हुआ है। इसके अन्तर्गत कोई सार्थक अन्तर नहीं है
8. अध्यापकों का सामाजिक कौशल :– इस क्षैत्र के अन्तर्गत आदिवासी व गैर–आदिवासी अध्यापकों का सामाजिक कौशल का मध्यमान कृमश :– 43.14 तथा मानक विचलन .958 प्राप्त हुआ है।

आदिवासी शिक्षको के जीवन कौशल का अध्ययन

आदिवासी शिक्षकों के जीवन कौशल का अध्ययन ज्ञात करने के लिए राजकीय व निजी विद्यालयों में प्रमापनी भरवाई गई। तथा उनसे दत्तो का संकलन किया गया। प्राप्त दंत्तो के आधार पर आदिवासी शिक्षकों के जीवन कौशल का मध्यमान व मानक विचलन का विश्लेषण किया गया।

सारणी

तालिका 3: आदिवासी शिक्षकों के जीवन कौशल से सम्बन्धित दन्तो के क्षैत्रवार मध्यमान एवं मानक विचलन

क्र. सं	क्षैत्र	छ	मध्यमान	मानक विचलन
1.	अध्यापको का रहन–सहन	400	26.79	1.386
2.	अध्यापको का व्यवहारिक ज्ञान	400	28.03	1.638
3.	अध्यापको का आपसी व्यवहार	400	37.72	1.818
4.	अध्यापको की सोच प्रवृति	400	41.07	2.326
5.	अध्यापको की कार्य शैली	400	33.39	1.002
6.	अध्यापको की नियमितता	400	31.94	2.068
7.	अध्यापको के सीखने की प्रवृति	400	32.53	1.588
8.	अध्यापको का सामाजिक कौशल	400	43.22	.964
	कुल		274.70	5.159

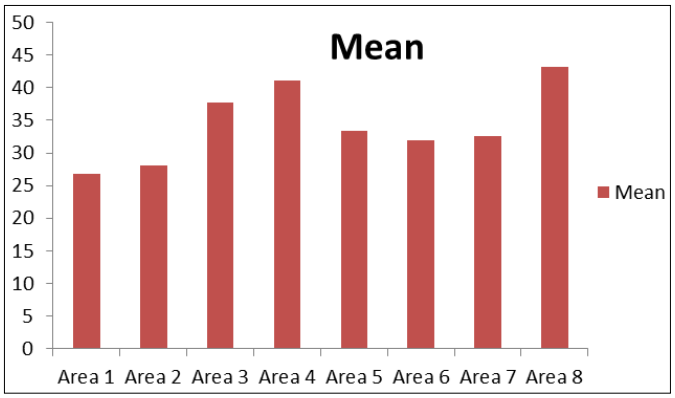

आरेख 2: आदिवासी शिक्षकों के जीवन कौशल से सम्बन्धित दन्तो के क्षैत्रवार मध्यमान

विश्लेषण

सारणी व आरेख संख्या 2 के आधार पर यह ज्ञात होता है कि राजकीय व निजी विद्यालयों के आदिवासी शिक्षको के जीवन कौशल के अध्ययन का मध्यमान क्रमषः– 274.70 व मानक विचलन 5.159 प्राप्त हुआ हैं।

क्षैत्रानुसार विश्लेषण

1. अध्यापको का रहन–सहन :– इसके अन्तर्गत उदयपुर क्षैत्र के आदिवासी का मध्यमान 26.79 तथा मानक विचलन 1.386 प्राप्त हुआ है।
2. अध्यापकों का व्यवहारिक ज्ञान :– इस क्षैत्र के अन्तर्गत आदिवासी अध्यापकों का मध्यमान 28.03 तथा मानक विचलन 1.386 प्राप्त हुआ है।
3. अध्यापकों का आपसी व्यवहार :– इस क्षैत्र के अन्तर्गत आदिवासी अध्यापकों का मध्यमान 37.72 तथा मानक विचलन 1.818 प्राप्त हुआ है।
4. अध्यापको की सोच प्रवृति :– इस क्षैत्र के अन्तर्गत आदिवासी अध्यापको की सोच प्रवृति के मध्यमान 41.07 तथा मानक विचलन 2.326 प्राप्त हुआ है।
5. अध्यापको की कार्य शैली :– इस क्षेत्र के अन्तर्गत आदिवासी अध्यापकों की कार्य शैली के मध्यमान 33.39 तथा मानक विचलन 1.002 प्राप्त हुआ है।
6. अध्यापकों की नियमितता :– इस क्षैत्र के अन्तर्गत आदिवासी अध्यापको की नियमितता के मध्यमान 31.94 तथा मानक विचलन 2.068 प्राप्त हुआ हैं।
7. अध्यापकों के सीखने की प्रवृति :– इस क्षैत्र के अन्तर्गत आदिवासी अध्यापकों के सीखने की प्रवृति के मध्यमान 32.53 तथा मानक विचलन 1.588 प्राप्त हुआ है ।
8. अध्यापकों का सामाजिक कौशल :– इस क्षैत्र के अन्तर्गत आदिवासी अध्यापकों का सामाजिक कौशल का मध्यमान 43.22 तथा मानक विचलन .969 प्राप्त हुआ है ।

गैर–आदिवासी शिक्षकों के जीवन कौशल का अध्ययन

गैर–आदिवासी शिक्षकों के जीवन कौशल अध्ययन को ज्ञात करने के लिये राजकीय व निजी विद्यालयों में गैर आदिवासी शिक्षको से प्रमापनी भरवाई गई तथा दंत्तो का संकलन किया गया, प्राप्त दंत्तो के आधार पर गैर–आदिवासी शिक्षको के जीवन कौशल के अध्ययन का विश्लेषण किया गया है ।

सारणी

तालिका 4: गैर–आदिवासी शिक्षकों के जीवन कौशल से सम्बन्धित दन्तो के क्षैत्रवार मध्यमान एवं मानक विचलन

क्र सं	क्षैत्र	अध्यापक	N	मध्यमान	मानक विचलन
1.	अध्यापको का रहन–सहन	गैर–आदिवासी	400	26.54	1.391
2.	अध्यापको का व्यवहारिक ज्ञान	गैर–आदिवासी	400	28.18	1.752
3.	अध्यापको का आपसी व्यवहार	गैर–आदिवासी	400	37.84	1.872
4.	अध्यापको की सोच प्रकृति	गैर–आदिवासी	400	39.39	2.595
5.	अध्यापको की कार्य शैली	गैर–आदिवासी	400	31.68	1.444
6.	अध्यापको की नियमितत	गैर–आदिवासी	400	31.79	2.003
7.	अध्यापको के सीखने की प्रवृति	गैर–आदिवासी	400	32.50	1.518
8.	अध्यापको का सामाजिक कौशल	गैर–आदिवासी	400	43.07	.969
कुल				270.99	5.735

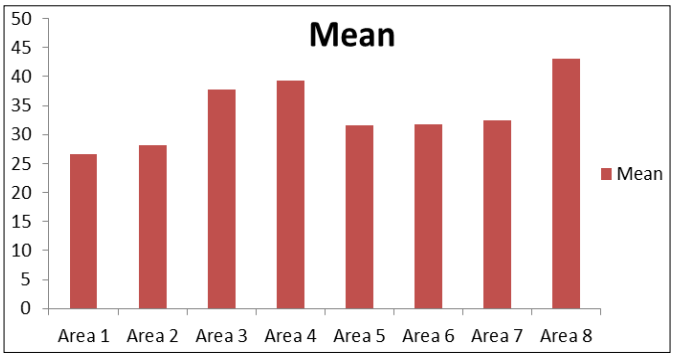

आरेख 3:– गैर–आदिवासी शिक्षकों के जीवन कौशल से सम्बन्धित दन्तो के क्षैत्रवार मध्यमान

विश्लेषण :– सारणी व आरेख संख्या 3 के आधार पर यह ज्ञात होता है कि राजकीय व निजी विद्यालयों में गैर–आदिवासी शिक्षको के जीवन कौशल के अध्ययन के दंत्तो का मध्यमान 269.39 तथा मानक विचलन 5.735 प्राप्त हुआ है।

क्षैत्रानुसार विश्लेषण

1. अध्यापको का रहन–सहन :– इसके अन्तर्गत उदयपुर क्षैत्र के गैर–आदिवासी अध्यापको के रहन–सहन का मध्यमान 26.54 तथा मानक विचलन 1.391 प्राप्त हुआ है।
2. अध्यापकों का व्यवहारिक ज्ञान :– इस क्षैत्र के अन्तर्गत गैर–आदिवासी अध्यापकों का मध्यमान 28.18 तथा मानक विचलन 1.752 प्राप्त हुआ है। इसके अन्तर्गत कोई सार्थक अन्तर नहीं है ।
3. अध्यापकों का आपसी व्यवहार :– इस क्षैत्र के अन्तर्गत गैर–आदिवासी अध्यापको का मध्यमान 37.84 तथा मानक विचलन 1.872 प्राप्त हुआ है।
4. अध्यापको की सोच प्रवृति :– इस क्षैत्र के अनतर्गत गैर–आदिवासी अध्यापको की सोच प्रवृति के मध्यमान 39.39 तथा मानक विचलन 2.559 प्राप्त हुआ है।
5. अध्यापको की कार्य शैली :– इस क्षैत्र के अन्तर्गत गैर आदिवासी अध्यापको की कार्य शैली के मध्यमान 31.68 तथा मानक विचलन 1.444 प्राप्त हुआ है।
6. अध्यापकों की नियमितता :– इस क्षैत्र के अन्तर्गत गैर–आदिवासी अध्यापको की नियमितता के मध्यमान 31.79 तथा मानक विचलन 2.003 प्राप्त हुआ हैं।
7. अध्यापको के सीखने की प्रवृति :– इस क्षैत्र के अन्तर्गत गैर–आदिवासी अध्यापकों के सीखने की प्रवृति के मध्यमान 32. 50 तथा मानक विचलन 1.508 प्राप्त हुआ है।
8. अध्यापकों का सामाजिक कौशल :– इस क्षैत्र के अन्तर्गत गैर–आदिवासी अध्यापकों का सामाजिक कौशल का मध्यमान 43.07 तथा मानक विचलन .969 प्राप्त हुआ है।

आदिवासी तथा गैर–आदिवासी शिक्षकों के जीवन कौशल में तुलना

तालिका 4:– आदिवासी तथा गैर–आदिवासी शिक्षकों के जीवन कौशल में तुलना

क्र सं	क्षैत्र	आदिवासी अध्यापक		गैर–आदिवासी अध्यापक			सार्थक / असार्थक
		मध्यमान	मानक विचलन	मध्य मान	मानक विचलन	टी मूल्य	
1	अध्यापको का रहन–सहन	26.79	1.386	26.54	1.391	.214	असार्थक
2	अध्यापको का व्यवहारिक ज्ञान	28.03	1.638	28.18	1.752	.411	असार्थक
3	अध्यापको का आपसी व्यवहार	37.72	1.818	37.84	1.872	1.081	असार्थक
4	अध्यापको की सोच प्रवृति	41.07	2.326	39.39	2.595	.669	सार्थक
5	अध्यापको की कार्य शैली	33.39	1.002	31.68	1.444	.986	असार्थक
6	अध्यापको की नियमितता	31.94	2.068	31.79	2.003	.439	असार्थक
7	अध्यापको के सीखने की प्रवृति	32.53	1.588	32.50	1.508	1.082	असार्थक
8	अध्यापको का सामाजिक कौशल	43.22	.969	43.07	.969	.080	सार्थक
	कुल	274.70	5.159	270.99	5.330	1.322	

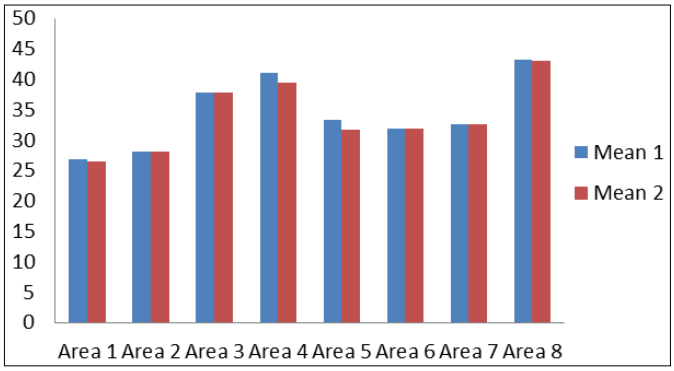

आरेख 4:– आदिवासी तथा गैर–आदिवासी शिक्षकों के जीवन कौशल में तुलना

विश्लेषण :– सारणी व आरेख संख्या 4 के आधार पर यह ज्ञात होता है आदिवासी तथा गैर आदिवासी शिक्षको के जीवन कौशल में तुलनात्मक अध्ययन के दंत्तो के मध्यमान 274.70 व 270.99 तथा मानक विचलन 5.159 व 5.330 प्राप्त हुए है। तथा उनका टी मूल्य 1.322 प्राप्त हुआ है। अतः गैर–आदिवासी शिक्षको के जीवन कौशल के अध्ययन के अन्तर्गत कोई अधिक सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है।

क्षैत्रानुसार विश्लेषण

1. अध्यापको का रहन–सहन :– इसके अन्तर्गत उदयपुर क्षेत्र के आदिवासी तथा गैर–आदिवासी अध्यापको के रहन–सहन का आदिवासी अध्यापक का मध्यमान 26.79 व 26.54 तथा मानक विचलन 1.386 व 1.391 प्राप्त हुआ है। इसके अन्तर्गत कोई सार्थक अन्तर नहीं है ।
2. अध्यापकों का व्यवहारिक ज्ञान :– इस क्षैत्र के अन्तर्गत आदिवासी व गैर–आदिवासी अध्यापकों का मध्यमान 28.03 व 28.18 तथा मानक विचलन 1.638 व 1.752 प्राप्त हुआ है। इसके अन्तर्गत कोई सार्थक अन्तर नहीं है ।
3. अध्यापकों का आपसी व्यवहार :– इस क्षैत्र के अन्तर्गत आदिवासी व गैर–आदिवासी अध्यापको का मध्यमान 37.72 व

37.84 तथा मानक विचलन 1.818 व 1.872 प्राप्त हुआ है।इसके अन्तर्गत कोई सार्थक अन्तर नहीं है ।

4. अध्यापको की सोच प्रवृति :– इस क्षैत्र के अन्तर्गत आदिवासी व गैर–आदिवासी अध्यापको की सोच प्रवृति के मध्यमान 41.07 व 39.39 तथा मानक विचलन 2.326 व 2.595 प्राप्त हुआ है। इसके अन्तर्गत कोई सार्थक अन्तर है ।
5. अध्यापको की कार्य शैली :– इस क्षेत्र के अन्तर्गत आदिवासी व गैर आदिवासी अध्यापको की कार्य शैली के मध्यमान कृमशः 33. 39 व 31.68 तथा मानक विचलन 1.002 व 1.444 प्राप्त हुआ है। इसके अन्तर्गत कोई सार्थक अन्तर नहीं है ।
6. अध्यापकों की नियमितता :– इस क्षैत्र के अन्तर्गत आदिवासी व गैर–आदिवासी अध्यापको की नियमितता के मध्यमान 31.94 व 31.79 तथा मानक विचलन 2.068 व 2.003 प्राप्त हुआ हैं। इसके अन्तर्गत कोई सार्थक अन्तर नहीं है ।
7. अध्यापको के सीखने की प्रवृति :– इस क्षैत्र के अन्तर्गत आदिवासी तथा गैर–आदिवासी अध्यापकों के सीखने की प्रवृति के मध्यमान 32.53 व 32.50 तथा मानक विचलन 1.588 व 1. 508 प्राप्त हुआ है अतः आदिवासी व गैर आदिवासी अध्यापको के सीखने की प्रवृति में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है।
8. अध्यापकों का सामाजिक कौशल :– इस क्षैत्र के अन्तर्गत आदिवासी व गैर–आदिवासी अध्यापकों का सामाजिक कौषल का मध्यमान 43.22 व 43.07 तथा मानक विचलन .969 व .969 प्राप्त हुआ है इसके अन्तर्गत कोई सार्थक अन्तर है ।

निष्कर्ष :– प्रस्तुत शोध अध्ययन में आदिवासी व गैर–आदिवासी शिक्षकों के जीवन कौशल, उपकरण प्रशासित करने से प्राप्त दत्तों का अंकन, गणना, विश्लेषण, तुलना आदि प्रक्रिया पूर्ण करने के पश्चात निम्नलिखित निष्कर्ष किए गए–

- आदिवासी तथा गैर–आदिवासी शिक्षकों के जीवन कौशल के समग्र में गैर–आदिवासी तथा आदिवासी में सार्थक कोई अन्तर नहीं पाया गया।
- आदिवासी शिक्षकों के जीवन कौशल भी समग्र क्षेत्रों में अच्छा पाया गया ।
- गैर–आदिवासी शिक्षकों के जीवन कौशल भी समग्र क्षेत्रों में अच्छा पाया गया। आदिवासी तथा गैर–आदिवासी शिक्षकों के जीवन कौशल की तुलना में गैर–आदिवासी शिक्षको का जीवन कौशल उच्च पाया गया।

आदिवासी तथा गैर–आदिवासी शिक्षकों के जीवन कौशल के अध्ययन का निष्कर्षः–

1. आदिवासी तथा गैर–आदिवासी शिक्षकों का जीवन कौशल समग्र क्षैत्रों में उच्च पाया गया है।
2. आदिवासी शिक्षकों का जीवन कौशल समग्र क्षैत्रों में उच्च पाया गया है।
3. गैर–आदिवासी शिक्षकों का जीवन कौशल समग्र क्षैत्रो में उच्च पाया गया है। आदिवासी तथा गैर–आदिवासी शिक्षकों के जीवन कौशल की तुलनात्मकता में गैर–आदिवासी शिक्षको का जीवन कौशल उच्च पाया गया परन्तु आदिवासी तथा गैर–आदिवासी शिक्षको में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

जीवन कौशल की दृष्टि से :– इसके अन्तर्गत आदिवासी व गैर–आदिवासी शिक्षकों के जीवन कौशल के बारे में पता लगाा। उनकी उन समस्याओं के बारे में पता लगाया है जो कि उनके जीवन कौशल को उच्च बनाने में रूकावट पैदा कर रहीं है। शोध के अन्तर्गत पाया गया है कि आदिवासी शिक्षकों का जीवन कौशल गैर–आदिवासी शिक्षकों की तुलना में मध्यम अन्तर पाया गया है। अतः इस शोध के माध्यम से हमने उन समस्याओं का पता लगाया तथा उनका समाधान का आदिवासी शिक्षकों तथा गैर–आदिवासी शिक्षकें के जीवन में ज्यादा सार्थक अन्तर ना रहे।

शोध हेतु सुझाव

1. शिक्षा के विभिन्न स्तरीय विद्यालयों के आदिवासी व गैर–आदिवासी शिक्षको के जीवन कौशल अध्यापन दक्षता का अध्ययन किया जा सकता है।
2. शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर शोध विषय कि भी आवृति कि जा सकती हैं।
3. महाविद्यालय स्तरों पर भी आदिवासी तथा गैर–आदिवासी शिक्षकों के जीवन कौशल तथा अध्यापन दक्षता से सम्बन्धित विषय पर अध्ययन किया जा सकता है।
4. शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर आदिवासी व गैर–आदिवासी शिक्षकों का विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि के साथ सम्बन्धों के प्रभाव विषय पर भी अध्ययन किया जा सकता है।
5. आदिवासी तथा गैर–आदिवासी शिक्षकों के उनके अनुभव व उनकी कार्य शैली पर प्रभाव का अध्ययन किया जा सकता है।
6. छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि के विषय पर भी समीक्षात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
7. शिक्षकों का छात्रों के साथ व्यवहार एवं अजिर्त ज्ञान के प्रभाव का अनेक पक्षीय अध्ययन कर सकते है।